इस जीवन में लोगों का साथ वैसा ही है जैसा यात्रा में सहयात्रीओं का साथ होता है। लोग इस दुनिया में रहते हैं .. मां, पिता, भाई, बहन, पत्नी, पति, दोस्तों या कोई अन्य संबंध। ये सब उन परिचित लोगों की तरह हैं जिनके साथ हम अपनी यात्रा के दौरान यात्रा करते हैं। यात्रा के दौरान ट्रेन में कहें, हमारे डिब्बे में लोग को रहते हैं। हम समय काटने के लिए उनके साथ गपशप करते। साथ में चाय पी सकते है। साथ में खाना खा सकते है। लेकिन जिसका स्टेशन आता है वो उतर जाता हैं। साथ समाप्त हो जाता है। स्थायी संबंध नहीं हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ऐसे ही जीवन में  हमारे रिश्ते होते है। पिता, माता, बेटी, बेटा, भाई, बहन, मित्र में से जिसका मृत्यु रूपी स्टेशन आता है, उसे जाना होता है। कोई भी हमारा स्थायी साथी नहीं है। केवल एक भगवान ही हर पल हमारे साथ रहते हैं और अपनी अकारण करुणा के कारण हमारे लिए कई चीजें करते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम उनकी करुणा मेहसूस नहीं करते हैं। भगवान ही हमारा का एकमात्र सच्चा निरपेक्ष साथी है। इसलिए सभी का वह एकमात्र प्रेमास्पद है। हमें उससे उस संबंध से प्यार करना चाहिए जो हमें सबसे ज्यादा पसंद है। वह हमारा क्या नही लगता? वह हमारा पिता, मां, बेटा, बेटी, दोस्त, पति, प्रेमी सबकुछ है। लेकिन सबसे दुःखद बात यह है कि हम कभी भी मानव जीवन के इस पहलू को नहीं देखते हैं .. !!!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जीवन धूल के कणों की तरह भी है। हवा के एक झोंके में तैरती धूल की कण, हवा की दिशा में बहती जाती हैं। हवा बंद होने के बाद, कहीं भी बस जाती है। फिर, हवा का एक और झोंका उन्हें साथ ले जाता है। धूल के कणों

के बीच कोई संबंध नहीं है। बस मौके से, वे एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं और फिर से अलग होते हैं।

इसी तरह, सब जीव इस ब्रह्मांड में एक वैश्विक धूल के रूप में तैरते रहते हैं, जो अपने कर्मों के अनुसार निर्देशित होते हैं। जीवों के बीच कोई संबंध नहीं है। बस वे कुछ अन्य जीवें के साथ किसी जीवन में बस जाते हैं और फिर अलग हो जाते है। जो लोग इसे मेहसूस करते हैं, भगवान के साथ संबंध विकसित करते हैं। फिर वो धन, शक्ति, प्रतिष्ठा, स्थिति, वासना आदि की भौतिकवादी ताकतों द्वारा निर्देशित नहीं रहते हैं। भगवान के स्मरण में पारित क्षण केवल कुछ रचनात्मक काम में पारित किए जाते हैं। बाकी का कोई मूल्य नहीं है बल्कि इसका नकारात्मक मूल्य है! नकारात्मक इसलिए कि ये क्षण आपको भगवान से दूर ले जाते हैं, जिसका मतलब है कि आप खुशी से दूर जा रहे हैं और दुःख की ओर आगे बढ़ रहे हैं। भगवान को याद कर के ही कोई जीव सुखी रह सकता है।